ISSUE -1 (March - 2025)

SUSHRUSHA

The Wall Magazine of Pt Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences and Ayush University of Chhattisgarh, Atal Nagar, Nava Raipur.

Message from the Vice Chancellor

I am delighted to extend my heartfelt congratulations to the entire team for launching the inaugural issue of our University's Wall Magazine **" SUSHRUSHA"**. This initiative marks a significant step in fostering a culture of creativity, collaboration, and academic exchange within our institution.

The Wall Magazine will serve as a dynamic platform for our students and faculty to showcase their talents, share knowledge, and engage in meaningful discussions. It is a reflection of our commitment to holistic education, where academic excellence goes hand in hand with personal and professional growth.

I encourage everyone to contribute actively and make the most of this platform. Together, let us continue to nurture a vibrant learning community and uphold the values of integrity, innovation, and compassion that define our university.

Best wishes for a successful launch and continued success.

Dr. P.K. Patra

Vice Chancellor

Here's a rhyme on health

- Dr. Mrs. Deepti Verma, Programmer

Take care of your body, treat it right,
Eat fresh foods, keep it light.
Exercise daily, stay on your feet,
Good health's a journey, not a feat.

Drink your water, get some rest,
Your body and mind deserve the best.
A happy heart and a stress-free mind,
With good health, peace you'll find.

NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

3D Printing in Pediatric Dentistry: An Overview

- Brij Kumar
Department of Pediatric and Preventive Dentistry
Rungta College of Dental Sciences and Research, Bhilai

Introduction: 3D printing technology has transformed various fields, and pediatric dentistry is no exception. The integration of 3D printing into dental practices has led to innovations that improve diagnostics, treatment planning, and patient-specific care. This essay explores how 3D printing enhances pediatric dental care, emphasizing its benefits, applications, and future potential.

Applications of 3D printing in Pediatric Dentistry:

3D printing in pediatric dentistry offers a range of innovative applications that enhance the quality of care, improve educational outcomes, and streamline clinical procedures. Here are some notable uses:

1. **Customized Dental Appliances:** 3D printing allows for the production of patient-specific appliances, such as space maintainers and orthodontic devices. This technology ensures a more precise fit and better functionality compared to conventional methods. For instance, 3D-printed band-and-loop space maintainers are highlighted for their improved accuracy and adaptability.
2. **Educational Tools:** Dental education has greatly benefited from 3D-printed models that simulate various dental conditions, such as caries and hypomineralization. These realistic models provide dental students with hands-on practice opportunities, enhancing their understanding of pediatric dental anatomy and procedures.
3. **Surgical Planning and Simulation:** 3D printing is utilized for creating detailed replicas of a patient's oral cavity, enabling practitioners to rehearse complex procedures. This practice enhances precision and reduces surgical risks, making it particularly valuable for younger patients who may face unique dental challenges.
4. **Restorative and Prosthetic Solutions:** The technology enables the production of dental crowns, bridges, and other restorative pieces directly from digital scans. This application streamlines the restoration process and can be particularly helpful in pediatric cases where fast, minimally invasive solutions are essential.
5. **Patient Communication and Engagement:**3D-printed models can also be used to explain treatment plans to parents and children by showing physical models of affected teeth or planned appliances. This visual aid helps in better understanding and decision-making.

These applications demonstrate how 3D printing is not only modernizing dental practices but also creating more customized, effective, and child-friendly approaches in pediatric dentistry.

Advantages of 3D Printing

- **Customization:** 3D-printed models are tailored to fit the specific anatomical structures of each patient, leading to more effective treatment outcomes.
- **Cost and Time Efficiency:** Although the initial investment in 3D printing technology may be substantial, it reduces long-term costs by minimizing material waste and time spent on manual fabrication.
- **Enhanced Patient Experience:** The accuracy and comfort of custom-fitted devices reduce the need for repeated adjustments, making the process more comfortable for children.

Challenges and Considerations:

Despite its many benefits, 3D printing in pediatric dentistry is not without challenges. The technology requires significant financial investment and technical expertise. Additionally, practitioners need training to fully integrate 3D printing into their workflow. Ensuring biocompatibility and safety of the printed materials is another crucial aspect that must be continuously monitored.

Future Prospects:

As 3D printing technology evolves, its applications in pediatric dentistry are expected to expand. Future developments may include more complex bio-printing techniques for tissue engineering and enhanced materials that better mimic natural dental tissues. With ongoing research and advancements, 3D printing promises to revolutionize not only pediatric dentistry but the broader field of dental care.

Conclusion:

3D printing has proven to be a game changer in pediatric dentistry, offering tailored, efficient, and effective solutions for young patients. By fostering improved educational tools, customized treatments, and surgical precision, it enhances both the quality of care and the patient experience. Continued innovation and adaptation will further cement its role in shaping the future of pediatric dental practices.

विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह में उल्लेखित आदर्श वाक्य का विवरण

— डॉ. दिनेश कुमार सिन्हा, कुलसचिव

"ज्ञानेन लभतां लोक आयुरारोग्य सम्पदः"

"इस संसार में ज्ञान के द्वारा आयु, आरोग्य (स्वास्थ्य), और संपत्ति प्राप्त होती है।"

विस्तृत व्याख्या :

ज्ञानेनः ज्ञान के माध्यम से। यहाँ ज्ञान का मतलब सही जानकारी, शिक्षा, और समझ से है।

लभताः प्राप्त होता है।

लोकः संसार या मनुष्य।

आयुः लंबी और स्वस्थ आयु।

आरोग्यः अच्छा स्वास्थ्य।

सम्पदः धन–सम्पत्ति, समृध्दि या संपन्नता।

श्लोक यह संदेश देता है कि ज्ञान ही वह साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति दीर्घायु, स्वास्थ्य, और जीवन में सुख–समृध्दि प्राप्त कर सकता है। ज्ञान का महत्व जीवन के हर पहलू में सर्वोपरि है, क्योंकि यह हमें सही दिशा और निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करता है।

उपनिषदों में स्वास्थ्य

— डॉ. एस. के. चटर्जी, उप कुलसचिव

उपनिषदों में स्वास्थ्य को केवल शारीरिक स्थिति के रूप में नही बल्कि मानसिक आध्यात्मिक और आत्मिक संतुलन के रूप में देखा गया है। यह संपूर्णता और समग्रता की धारणा पर आधारित है। जिसमें शरीर, मन और आत्मा का संतुलन, स्वास्थ्य का मूलभूत आधार माना गया है। उपनिषदों में स्वास्थ्य के कुछ प्रमुख पहलुओं का वर्णन इस प्रकार है:

1. आत्मा और शरीर का संबंधः उपनिषदों के अनुसार शरीर केवल आत्मा का वाहन है। शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य बनाए रखना महत्वपूर्ण है। जब व्यक्ति आत्मा के साथ अपने संबंध को पहचानता है तब उसे सच्ची शांति और संतुलन प्राप्त होता है।
2. प्राण और प्राणायामः प्राण या जीवनशक्ति को स्वस्थ रखने के लिए प्राणायाम और श्वास के अभ्यास का महत्व बताया गया है। प्राण का सही प्रवाह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।
3. मन का शांति में रहनाः उपनिषदों में मानसिक स्वास्थ्य को अत्यंत महत्व दिया गया है। मन की शांति और संतुलन बनाए रखने के लिए ध्यान और योग का अभ्यास आवश्यक बताया गया है। मन की चंचलता और इच्छाओं का नियंत्रण करना स्वास्थ्य का एक प्रमुख भाग है।
4. आहार और संयमः उपनिषदों में संयमित और शुध्द आहार का वर्णन किया गया है। शुध्द सात्विक आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बल्कि मानसिक और आत्मिक शुध्दता के लिए भी महत्वपूर्ण माना गया है।
5. ध्यान और आत्मा की खोजः आत्मा की वास्तविकता को पहचानने और आत्म साक्षात्कार करने की प्रक्रिया को स्वास्थ्य की सर्वोच्च स्थिति बताया गया है। जब व्यक्ति अपने सच्चे स्वरूप को पहचान लेता है तब सभी प्रकार के रोगों और मानसिक अशांति से मुक्त हो जाता है।
6. स्वास्थ्य का आध्यात्मिक दृष्टिकोणः उपनिषदों में कहा गया है कि सच्चा स्वास्थ्य वह है जो आत्मा के शुध्द और शाश्वत स्वरूप के साथ जुड़ा हुआ है। बाहरी स्वास्थ्य केवल अस्थायी है लेकिन आत्मिक स्वास्थ्य शाश्वत और सच्चे आनंद का स्त्रोत है।

इस प्रकार उपनिषदों में स्वास्थ्य केवल शारीरिक स्तर तक सीमित नही है बल्कि मानसिक सामाजिक और आत्मिक सभी स्तरों पर संतुलन और शांति का प्रतीक है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्वास्थय विज्ञान एवं आयुष विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ की आत्मकथा

— श्री विजयेन्द्र सिंह राणा, सहायक ग्रंथपाल

मेरा नाम है पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्वास्थ्य विज्ञान एवं आयुष विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ विधानसभा में दिनांक 16 सितंबर 2008 को पारित अधिनियम क्रमांक 8850/डी. 242/21–अ/प्रा./छ.ग./08 दिनांक 12.09.2008 द्वारा मेरी स्थापना छत्तीसगढ़ राज्य के स्वास्थ्य विज्ञान और आयुष शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार और समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से की गई थी। मेरा मुख्यालय अटल नगर, नवा रायपुर में स्थित है, जो छत्तीसगढ़ की राजधानी है।

मुझे छत्तीसगढ़ सरकार ने इस क्षेत्र की बढ़ती जरूरतों और चिकित्सा शिक्षा को विश्वस्तरीय बनाने के लिए स्थापित किया। मेरा नाम महान विचारक और समाजसेवी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर रखा गया, जो "एकात्म मानववाद" के प्रणेता थे। उनकी प्रेरणा मेरे मिशन और दृष्टिकोण में झलकती है।

मेरी यात्रा

मेरी जिम्मेदारी छत्तीसगढ़ के चिकित्सा, दंत चिकित्सा, नर्सिंग कॉलेजों एवं आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी और योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा जैसे पारंपरिक चिकित्सा पध्दतियों को समन्वित एवं बढ़ावा देना है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न हिस्सों में फैले मेडिकल और आयुष महाविद्यालय मेरे अधीन आते हैं। मैं छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान के अवसर, और आधुनिक चिकित्सा पध्दति के साथ–साथ भारतीय पारंपरिक चिकित्सा का गहन ज्ञान प्रदान करता हूँ।

मेरे दशा को सही दिशा प्रदान करने में नेतृत्वकर्ता कुलपतियों का प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मेरे प्रथम कुलपति पद्मश्री डॉ. ए. टी. दाबके जी ने मेरी मजबूत नींव रखी। द्वितीय कुलपति डॉ. जी. बी. गुप्ता जी के कुशल प्रशासन ने मुझे नई ऊँचाई प्रदान किया। तृतीय कुलपति डॉ. ए. के. चन्द्राकर जी ने कोविड महामारी के दौर में मुझे दृढ़तापूर्वक संबल प्रदान किया। मेरे वर्तमान कुलपति डॉ. पी. के. पात्रा पूर्व कुलपतियों के समृध्द परंपरा को जारी रखते हुए नई ऊर्जा और नवाचार के साथ मुझे लेकर उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

मेरी विशेषताएं

1. शैक्षणिक गुणवत्ता मैंने हमेशा गुणवतापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान को प्राथमिकता दी है।
2. आधुनिक और पारंपरिक चिकित्सा शिक्षा का समन्वय मैं आधुनिक चिकित्सा के साथ आयुर्वेद, योग, और अन्य पारंपरिक विधाओं का समन्वय करके समग्र स्वास्थ्य सेवा शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करता हूँ।
3. डिजिटल प्रगति मेरे प्रशासन और परीक्षाओं में डिजिटल तकनीकों का समावेश किया गया है।

मेरी उपलब्धियां

पिछले वर्षों में मैने सैकडों छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान की है। मेरे छात्रों ने न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। मेरे अंतर्गत आने वाले कॉलेजों ने स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार के नए आयाम स्थापित किए है।

मेरी दृष्टि

मैं छत्तीसगढ़ और भारत को स्वास्थ्य शिक्षा और अनुसंधान में एक वैश्विक केन्द्र के रूप में स्थापित करना चाहता हूँ। मेरा सपना है कि मेरी छत्रछाया में प्रशिक्षित डॉक्टर और स्वास्थ्य सेवाकर्मी समाज की सेवा में अग्रणी बनें।

मैं छत्तीसगढ़ के लोगों की स्वास्थ्य संबंधी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रतिबध्द हूँ।

Compiled by :- Dr. Suparna Sen Gupta, Librarian